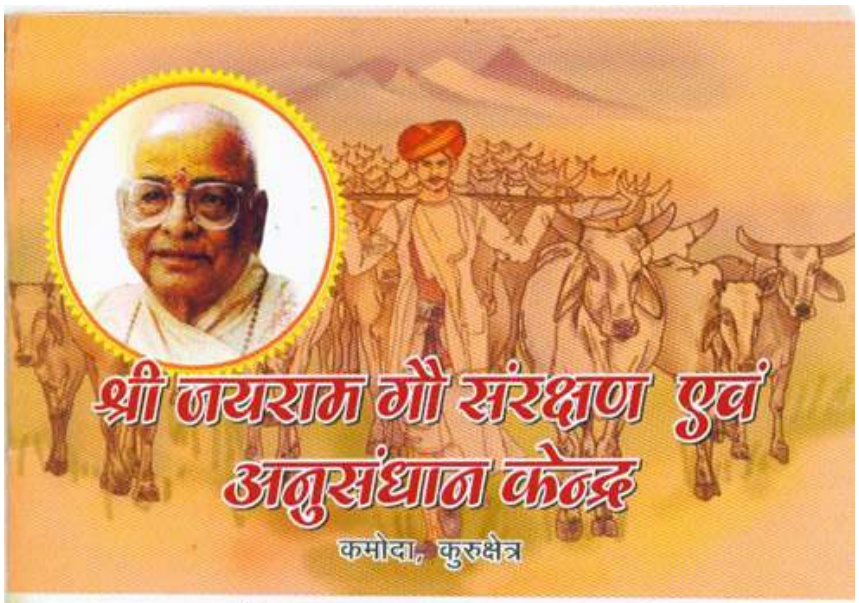

श्री जयराम गौ संरक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र

कमोदा, कुरुक्षेत्र

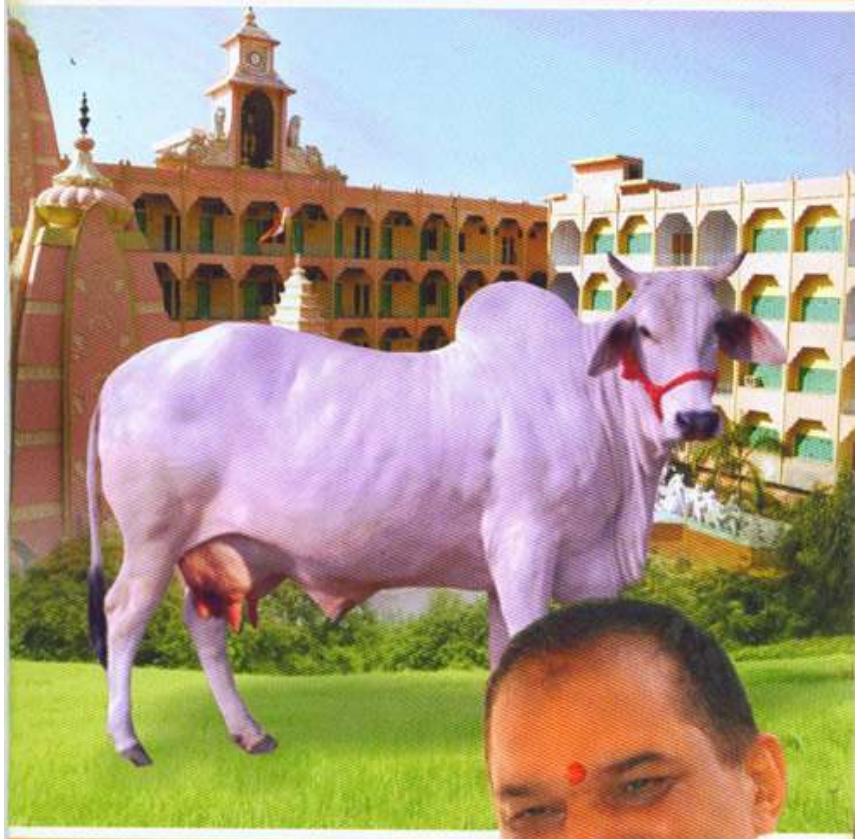

समाजसेवा में समर्पित

श्री जयराम आश्रम संस्थाएँ

श्री जयराम पंचायती गौशाला बेरी, रोहतक हरियाणा श्री जयराम आश्रम द्वारा बेरी में 1886 में गोशाला का पावन शुभारम्भ हुआ। स्थापना वर्ष से लेकर अद्यावधि गोसेवा का यह दिव्य संकल्प उत्तरोत्तर प्रगतिशील है। गोशाला 06 एकड़ में स्थापित है तथा इसके संचालनार्थ लगभग 45 एकड़ जमीन की अतिरिक्त व्यवस्था है। इस गोशाला में दुधारु एवं वृद्ध सभी प्रकार की गायों की सेवा होती है यहाँ वर्तमान में लगभग 3500 गायों की समुचित सेवा सम्पन्न हो रही है।

श्री जयराम पंचायती गौशाला जखोली, सोनीपत, हरियाणा श्री जयराम आश्रम द्वारा गोसेवा हेतु सोनीपत में दूसरी गोशाला का निर्माण सन् 1928 में किया गया। यहाँ भी गोमाता की सेवा निरन्तर वृद्धिशील है। वर्तमान में यहाँ लगभग 1000 गायों की सेवा की जा रही है।

श्री जयराम आश्रम आदर्श गौशाला पूण्डरी, कैथल-हरियाणा श्री जयराम आश्रम की गोसेवा का यह तृतीय प्रयास है। 31 अगस्त सन् 2000 में इस गोशाला की स्थापना की गयी। यहाँ वर्तमान में लगभग 1500 गायों की विधिवत् सेवा का प्रबन्ध है।

श्री जयराम आश्रम गुरुदयाल आदर्श गौशाला द्वादरथ, जीन्द, हरियाणा गो सेवा के इस पावन क्रम को बढ़ाते हुए पूज्य महाराज जी ने सन् 2007 में जीन्द में एक गोशाला की स्थापना की जिसमें गोमाता की विधिवत् सेवा की जा रही है, यहाँ वर्तमान में लगभग 200 गायें सेवा प्राप्त कर रही हैं।

श्री जयराम आदर्श गौशाला गुमानीवाला, ऋषिकेश श्री जयराम कृषि अनुसन्धान फार्म, गुमानीवाला, ऋषिकेश, में भी गोमाताओं की सेवा का पावन क्रम संचालित हो रहा है। यहाँ भी लगभग 100 गायों की सेवा की जा रही है।

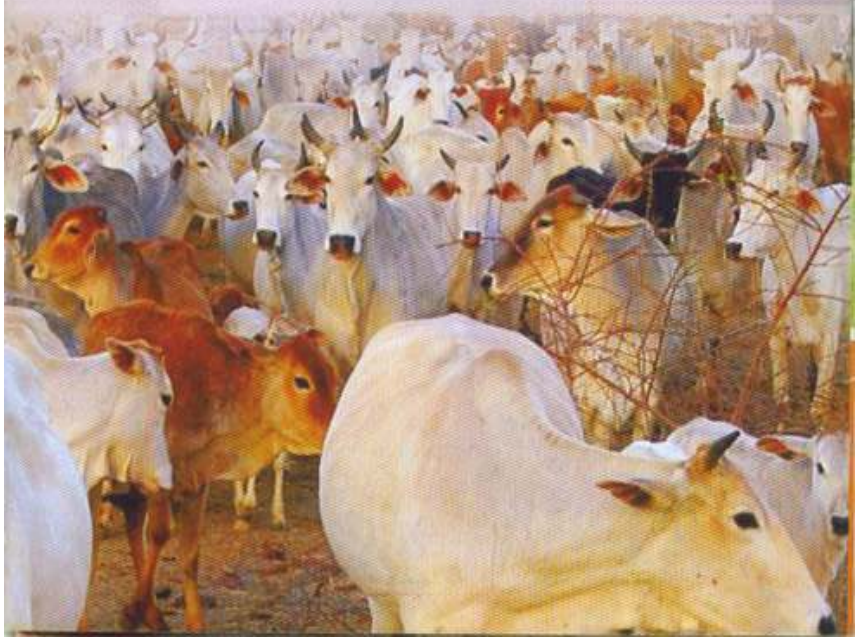

श्री जयराम आश्रम द्वारा
गौमाता की सेवा का नया प्रकल्प

प्रिय बन्धुओं !

धर्म-संस्कृति-संस्कृत-संस्कार एवं गो सेवा के संरक्षण में सतत् समर्पित, शिक्षा-चिकित्सा एवं सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में अत्यन्त जागरूक भूमिका का निर्वहन करती हुई यह लोकसेवी संस्था भारत के विभिन्न प्रान्तों में श्री जयराम आश्रम के नाम से सुप्रसिद्ध है। वर्तमान में इस संस्था द्वारा 06 गौशालाएँ संचालित हो रही हैं जिनमें लगभग 20 हजार गोवंश की सेवा हो रही है। संस्था द्वारा गोसेवा के इस शुभ संकल्प में एक नवीन अध्याय का शुभारम्भ किया जा रहा है। जिसका नाम **श्री जयराम गौसंरक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र** है। इस केन्द्र के द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में पायी जाने वाली गोमाताओं की विलुप्त हो रही विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण किया जायेगा। यह केन्द्र लगभग 30 बीघे भूमि में विस्तृत है। इस केन्द्र के माध्यम से देशी गायों के दुग्ध में वृद्धि, वृद्ध एवं बीमार गायों की समुचित चिकित्सा, उत्कृष्ट नस्ल के वृषभ तैयार कर गोवंश की वृद्धि करना हमारा लक्ष्य है। यह अपने आपमें गायों की सेवा का विशिष्ट संस्थान होगा। चिकित्सा के क्षेत्र में गौ के उत्पाद गोबर-गोमूत्र आदि के सम्भावित प्रभाव का भी यहाँ अनुसन्धान किया जायेगा।

भारतीय धर्मग्रन्थों में गोमाता की महिमा : हमारी सनातन परम्परा में ऋषि मुनियों ने गोमाता का अनुपम महिमा मण्डन किया है। **गावो विश्वस्य मातरः** (गाय जगत् की माता है) **गावः स्वर्गस्य सोपानं** (गाय स्वर्ग का साधन है) **मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः** (समस्त प्राणियों को सुख प्रदान करने वाली गोमाता है) **गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत** (गाय के समान कोई और धन नहीं है) इत्यादि वेद उपनिषद् तथा धर्मशास्त्रों की वाणी द्वारा गोमाता की महिमा का गुणगान किया गया है। ऋषियों की पावन भूमि भारतवर्ष में गाय चार पैरों वाला शुष्क तृणादि भक्षण करने वाला मात्र पशु विशेष नहीं है, अपितु यह हमारी श्रद्धा आस्था एवं प्रतिष्ठा का प्रतीक है। गो सेवा से होने वाले कल्याण की कतिपय कहानियाँ लोकजीवन में सर्वत्र प्रचलित हैं। गाय देवों का अधिष्ठान है। यह मोक्षदायिनी है। गोदान करने से नरकवैतरणी की यातना नहीं भोगनी पड़ती, इसलिए मरणासन्न प्राणी द्वारा गोदान की महनीय परम्परा आज भी प्रचलित है। गाय की सर्वश्रेष्ठ महिमा इन शब्दों में अनुस्यूत है- गाय मरी तो बचता कौन ? गाय बची तो मरता कौन ?

पञ्चगव्य का धार्मिक महत्त्व : इसे विविध रूपों में प्रयोग किया जाता है। हिन्दुओं के कोई भी मांगलिक कार्य पञ्चगव्य के बिना पूरे नहीं होते। भारत के गाँव-गाँव और शहर-शहर में आज भी मांगलिक पूजापाठ तथा उत्सवों में प्रसाद के रूप में पञ्चगव्य को ही प्रधानता दी जाती है। गृह शुद्धि और शरीर शुद्धि के लिए पञ्चगव्य का प्रयोग किया जाता है। "धर्मशास्त्र" के अनुसार किसी पाप के प्रायश्चित्त के रूप में पञ्चगव्य

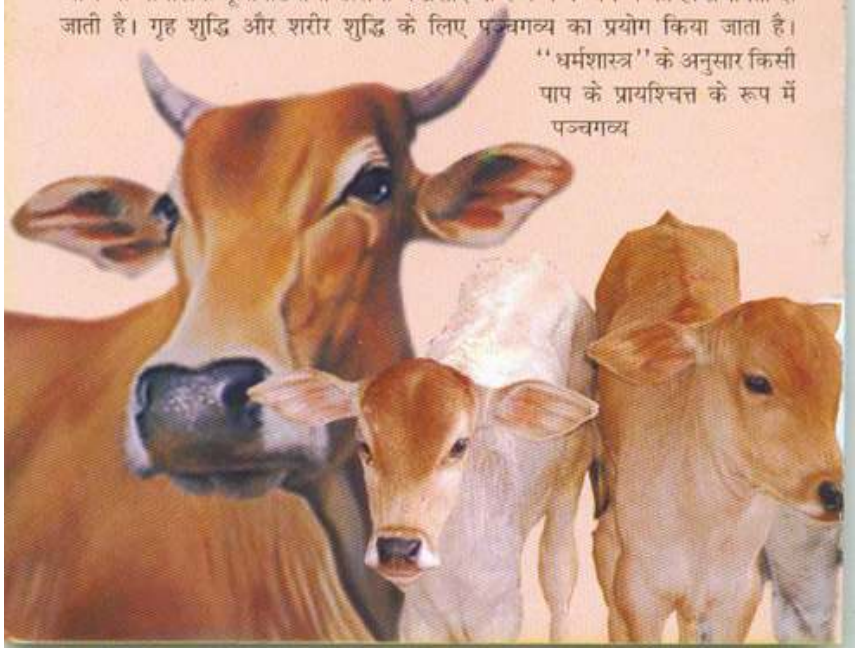

पञ्चगव्य का चिकित्सकीय महत्व : आयुर्वेद में इसे औषधि की मान्यता है। पाँचों का सम्मिश्रण कर यदि विधिपूर्वक उपयोग किया जाए तो यह हमारे आरोग्य और स्वास्थ्य के लिए रामबाण हो जाता है। पञ्चगव्य द्वारा शरीर में रोगनिरोधक क्षमता को बढ़कार रोगों को दूर किया जाता है।

पञ्चगव्य का प्रत्येक घटक : पञ्चगव्य का प्रत्येक घटक अपने में पूर्ण, महत्त्वपूर्ण गुणों से सम्पन्न और चमत्कारिक है।

गाय का दूध (गोदुग्ध) : गाय के दूध के समान पौष्टिक और संतुलित आहार कोई नहीं है। इसे अमृत माना जाता है। यह विपाक में मधुर, शीतल, वातपित्त शामक, रक्तविकार नाशक और सेवन हेतु सर्वथा उपयुक्त है।

गाय का दही (गोदधि) : गाय का दही भी समान रूप से जीवनीय गुणों से भरपूर है। दही में सुपाच्य प्रोटीन एवं लाभकारी जीवाणु होते हैं जो क्षुधा को बढ़ाने में सहायता करते हैं। गाय के दही से बना छाछ पचने में आसान और पित्त का नाश करने वाला होता है। दूध का प्रयोग विभिन्न प्रकार से भारतीय संस्कृति में पुरातन काल से होता आ रहा है।

गाय का घी (गोघृत) : गाय का घी विशेष रूप से नेत्रों के लिए उपयोगी है। घी का प्रयोग शरीर की क्षमता को बढ़ाने एवं मानसिक विकास के लिए किया जाता है। इसका सेवन कान्तिवर्धक माना जाता है।

गाय का मूत्र (गोमूत्र) : महर्षि चरक के अनुसार गोमूत्र कटु तीक्ष्ण एवं कषाय होता है। इसके गुणों में ऊष्णता, राष्युकता, अग्निदीपक प्रमुख है। गोमूत्र प्लीहा रोगों के निवारण में परम उपयोगी है। रासायनिक दृष्टि से देखने पर इसमें नाइट्रोजन, सल्फर, अमोनिया, कॉपर, लौह तत्त्व , यूरिक एसिड, यूरिया, फास्फेट, सोडियम, पोटैशियम, मैंगनीज, कार्बोलिक एसिड, कैल्शियम, क्लोराइड, नमक, विटामिन बी,ऐ,डी,ई; एंजाइम, लैक्टोज, हिप्पुरिक अम्ल, क्रियेटिनिन आदि मुख्य रूप से पाये जाते हैं। गोमूत्र में प्रति ऑक्सीकरण की क्षमता के कारण डीएनए को नष्ट होने से बचाया जा सकता है। गोमूत्र कफ नाशक, उदर रोग, नेत्र रोग, मूत्राशय के रोग, कष्ठ, कास, श्वास रोग नाशक, शोथ, यकृत रोगों में राम-बाण का काम करता है। चिकित्सा में इसका अन्तः वाह्य एवं वस्ति प्रयोग के रूप में उपयोग किया जाता है। यह अनेक पुरातन एवं असाध्य रोगों में परम उपयोगी है। यूरिया कीटाणुनाशक है। पोटैसियम क्षुधावर्धक, रक्तचाप नियामक है। सोडियम द्रव मात्रा एवं तंत्रिका शक्ति का नियमन करता है। मैगनीसियम एवं कैल्शियम हृदयगति का नियमन करते हैं।

गाय का गोबर (गोमय) : गोबर का उपयोग वैदिक काल से आज तक पवित्रीकरण हेतु भारतीय संस्कृति में किया जाता रहा है। यह दुर्गंधनाशक, पोषक, शोधक, बलवर्धक गुणों से युक्त है। विभिन्न वनस्पतियाँ, जो गाय चरती है उनके गुणों के प्रभावित गोमय का पान करने का विधान है।

पवित्र एवं रोग-शोक नाशक है। गाय के गोबर का चर्म रोगों में उपचारीय महत्व सर्वविदित है। गाय के गोबर में लक्ष्मी का निवास होता है ऐसी धारणा है इसीलिए भारतीय पूजा परम्परा में गोमय की महती महिमा है।

विनम्र अनुरोध

भारतीय जीवनपद्धति में गोमाता की महिमा, गोसेवा का पुण्य प्रभाव, पंचगव्य की महत्ता, पवित्रता एवं दिव्यता वेद-पुराण एवं लोक व्यवहार के जीवन में सर्वविदित है। ऋषियों का सम्पूर्ण जीवन गोमाता पर आश्रित था। लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्री कृष्ण को गोप्रेम ने गोपाल बना दिया भगवान् ने यहाँ तक कहा-

गावो ममाग्रतः सन्तु, गावो मे सन्तु पृष्ठतः, गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

(गायें मेरे आगे हों, गायें मेरे पीछे हों, गायें मेरे चारों ओर हों और मै गायों के मध्य वास करूँ) भगवान् की इस भावना का हमें सम्मान एवं पालन करना चाहिए। उनके आचरण का अनुकरण ही भक्ति है। इस समय देश में शहरीकरण की परिस्थिति, नैतिकमूल्यों की दुर्गति एवं हमारी भोगवादी मनस्थिति नें गोचर भूमि को नष्ट कर दिया है, लाखों गायें एवं गोवंश भयंकर उपेक्षित, तिरस्कृत एवं प्रताड़ित हो रहा है। गो माता के आहार एवं आश्रय स्थल का संकट उत्पन्न हो गया है। गायें अपंग-लाचार एवं बीमार भटक रही हैं, शहर का कूड़ा-कचरा खाने के लिए मजबूर हो रही हैं ऐसी दयनीय परिस्थिति में गोमाता की सेवा परम कर्तव्य है। यथाशक्ति गोमाता की सेवा में लगें यही प्रार्थना है। गोमाता की सेवा से समस्त देवता-ऋषि-मुनि एवं पितर तृप्त हो जाते हैं। वस्तुतः गोसेवा ही सच्ची गोविन्द की सेवा है।

श्री जयराम आश्रम द्वारा संचालित गौशालाएँ

1. श्री जयराम पंचायती गौशाला, जाखोली सोनीपत।
2. श्री जयराम पंचायती गौशाला, बेरी, झज्जर।
3. श्री जयराम आदर्श गौशाला, पुण्डरी, कैथल।
4. श्री जयराम आश्रम गुरुदयाल गौशाला, ढाथरथ, जीन्द
5. श्री जयराम आदर्श गौशाला, गुमानीवाला, ऋषिकेश।
6. श्री जयराम गौ-संरक्षण एवं अनुसन्धान केन्द्र, कामोदा, कुरुक्षेत्र।

गोसेवा में योगदान

1. गाय रखने में असमर्थ गोदान/आर्थिक सहयोग कर सकते हैं- 21000/-
2. गाय के एक वर्ष की गोग्रास व्यवस्था (भूसा-खली-चूनी-चोकर-अन्न हेतु)- 11000/-
3. गायों के आश्रय हेतु भवन निर्माण- यथाशक्ति
4. गायों के गोग्रास हेतु गोचर भूमि का दान।
5. गोशाला में कार्यरत गोसेवकों को प्रतिमाह सेवा शुल्क- 5001/-

Request-

In Our Hindu Culture Cow is respected and treated as Holy as a mother. In the Indian life style, the importance of serving mother cow effect of cow service importance of Panchgavya is well known. Her greatness and holiness is widely described in our Vedas, Puranas and Social life structure.

The life of Holy Saints and Sages was dependent on mother cow. Leela Purshottam Lord Shri Krishna was called 'Gopal' due to his love for Cows. God said:

Gawo mamagratah santu Gawo me santu prishthatah.

Gawo me sarvatah santu, Gawam madhye Vasamyaham

"Cow should be infront of me, Cow should be behind me. Cow should be all around me and I Should live among the Cows."

We must respect and abide by this sentiment of God. Adapting His teachings & conduct is the true devotion.

Today the urbanization in the Country, degradation of moral values and our materialistic mind set has swallowed up the pasture land of Cows.

Lakhs of cows and cow generations have been rendered homeless, exploited and abandoned. This has resulted in scarcity of fodder and shelter place for the mother Cow.

Cows have become siek, invalid, helpless and are left to wander in the streets. They are compelled to eat the waste material of the city. Under such pitiful conditions it is our utmost duty to serve the mother cow sincerely and to the best of our capacity. Actually Cow service is the true service of *Govinda*.

By serving mother Cow all Gods, Saints and forefathers are satisfied and we attain *'Moksha'*

Contribution towards Cow Service

- Those who are unable to keep cows can contribute financial help of -Rs.21 000/-
- Arrangement for Cows feeds for one year (for Bhusa-Khali-Chuni-Chokr-Food)-Rs 11,000/-
- You may donate generously for construction of Cow shed/shelter.
- Donation of land for growing fodder for Cows.
- To pay the wages of the workers employed in the cowshed- Rs 5001/-

-Brahmswaroop Brahmchari

Contact-

SHRI JAIRAM VIDYAPEETH, KURUKSHETRA

Near Brahmsarowar, Ph. -01744-293588, 290431

Email -jairamvidyapeeth@gmail.com

SHRI JAI RAM ASHRAM

Bhimgoda, Haridwar, Uttarakhand-249 401

Email -jairam22@rediffmail.com / jairam72@gmail.com

website- www.jairamashram.org

Ph. : (01334) 261735, 260251, Fax-260334